International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 5.401 Volume 7, Issue 9, September 2020
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

शाल्मली उपन्यास में कामकाजी महिला का संघर्ष

डॉ सुनीता ,सहायक प्रवक्ता हिंदी,
राजकीय कन्या महाविद्यालय,पाली,रेवाड़ी
Email sunitayadavrewari97@gmail.com

सारांश

नासिरा शर्मा का उपन्यास *शाल्मली* आधुनिक भारतीय समाज में कामकाजी और शिक्षित स्त्री के संघर्षों को गहराई से प्रस्तुत करता है। उपन्यास की मुख्य पात्र शाल्मली अपने दांपत्य जीवन, पारिवारिक दायित्वों और पेशेवर जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाए रखने का प्रयास करती है। उसका पति नरेश पुरुषोचित अहंकार और ईर्ष्या से ग्रस्त है, जिससे शाल्मली लगातार मानसिक और भावनात्मक दबाव का सामना करती है। बावजूद इसके, शाल्मली अपने अधिकारों, आत्मसम्मान और स्वतंत्रता की रक्षा करते हुए विवेकपूर्ण ढंग से अपने परिवार और संबंधों को निभाती है। उपन्यास में दिखाया गया है कि आधुनिक कामकाजी स्त्री के लिए घर और कार्यस्थल दोनों ही स्थानों पर जिम्मेदारियों का दोहरा बोझ होता है, और उसे अपनी इच्छाओं और पहचान की सुरक्षा भी करनी होती है। *शाल्मली* उपन्यास केवल व्यक्तिगत संघर्ष का चित्र नहीं है, बल्कि स्त्री की सामाजिक स्थिति, आत्मनिर्णय और आधुनिक जीवन की जटिलताओं का सशक्त प्रतिनिधित्व प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: शाल्मली उपन्यास में कामकाजी महिला का संघर्ष, आधुनिक भारतीय स्त्री, दांपत्य जीवन में मानसिक संघर्ष, आत्मसम्मान और स्वतंत्रता, पारिवारिक और पेशेवर जिम्मेदारियों का संतुलन।

प्रस्तावना

नासिरा शर्मा का उपन्यास *शाल्मली* आधुनिक भारतीय समाज में कामकाजी महिलाओं के जटिल और द्वंद्वपूर्ण जीवन की यथार्थपरक तस्वीर प्रस्तुत करता है। यह उपन्यास केवल एक स्त्री की व्यक्तिगत कथा नहीं है, बल्कि समकालीन समाज में कामकाजी और शिक्षित स्त्री के सामने उत्पन्न होने वाली सामाजिक,

मानसिक और भावनात्मक चुनौतियों का सशक्त दस्तावेज है। शाल्मली का चरित्र एक ऐसी महिला का प्रतिनिधित्व करता है, जो पारंपरिक परिवार और पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना में रहते हुए भी अपनी पहचान, आत्मसम्मान और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करती है। वह अपने दांपत्य जीवन, पारिवारिक दायित्वों और पेशेवर जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाए रखने का निरंतर प्रयास करती है, जिसके कारण वह बार-बार मानसिक और भावनात्मक दबाव का सामना करती है। उपन्यास में शाल्मली के संघर्ष का एक प्रमुख आयाम उसके पति नरेश के साथ संबंधों से जुड़ा है, जो पुरुषोचित अहंकार, ईर्ष्या और सामाजिक वर्चस्व की मानसिकता से ग्रस्त है। नरेश का व्यवहार शाल्मली के आत्मसम्मान और इच्छाओं के लिए निरंतर चुनौती पैदा करता है, जिससे उसकी मानसिक पीड़ा और आंतरिक संघर्ष गहन हो जाता है। इसके बावजूद शाल्मली न केवल अपने अधिकारों और स्वाभिमान के प्रति सजग रहती है, बल्कि परिवार को तोड़े बिना विवेकपूर्ण ढंग से परिस्थितियों का सामना करती है। उपन्यास में दिखाया गया है कि आधुनिक कामकाजी स्त्री के लिए घर और कार्यस्थल दोनों ही स्थानों में जिम्मेदारियों का दोहरा बोझ होता है, जिसके बीच उसे अपनी इच्छाओं और स्वतंत्रता की रक्षा भी करनी होती है। नासिरा शर्मा ने शाल्मली के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि स्त्री का संघर्ष केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना, रिश्तों की अपेक्षाओं और मानवीय व्यवहार की जटिलताओं से भी जुड़ा हुआ है। *शाल्मली* उपन्यास इस दृष्टि से आधुनिक स्त्री की संवेदनशीलता, साहस, विवेकशीलता और आत्मनिर्णय की प्रक्रिया का गहन अध्ययन प्रस्तुत करता है और कामकाजी महिला के संघर्ष को साहित्यिक विमर्श में एक सशक्त और प्रेरणादायक रूप प्रदान करता है।

अध्ययन की पृष्ठभूमि

समकालीन समाज में कामकाजी महिलाओं के जीवन में व्याप्त द्वंद्व और संघर्षों का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है, क्योंकि आधुनिक भारतीय स्त्री शिक्षा, रोजगार और सामाजिक स्वतंत्रता की दिशा में अग्रसर होने के बावजूद पारिवारिक और दांपत्य दायित्वों के बीच संतुलन बनाने की चुनौती का सामना करती है। नासिरा शर्मा का उपन्यास *शाल्मली* इसी संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक साहित्यिक स्रोत है, जो आधुनिक स्त्री के जीवन के यथार्थ और उसके मानसिक, भावनात्मक एवं सामाजिक संघर्षों को गहराई से प्रस्तुत करता है। उपन्यास में शाल्मली के माध्यम से यह दिखाया गया है कि कैसे एक कामकाजी स्त्री अपने पेशेवर और पारिवारिक जीवन की जटिलताओं का सामना करती है, अपने अधिकार, स्वतंत्रता और आत्मसम्मान की रक्षा करती है, और सामाजिक अपेक्षाओं के अनुरूप अपने निर्णयों का सशक्त निर्वाह करती है। अध्ययन का यह प्रयास उपन्यास के माध्यम से कामकाजी महिला के संघर्ष, उसकी आंतरिक चेतना और समाज में उसकी स्थिति को समझने का एक औचित्यपूर्ण मार्ग प्रस्तुत करता है। इसके अतिरिक्त, इस अध्ययन के माध्यम से स्त्री के सामाजिक, दांपत्य और पेशेवर जीवन में उत्पन्न

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**

चुनौतियों की व्यापक समीक्षा की जा सकती है, जिससे न केवल साहित्यिक दृष्टि से उपन्यास का मूल्यांकन संभव है, बल्कि सामाजिक विज्ञान और नारीवादी विमर्श के क्षेत्र में भी इसकी प्रासंगिकता स्पष्ट होती है।

अध्ययन का महत्व

नासिरा शर्मा के उपन्यास *शाल्मली* का अध्ययन आधुनिक भारतीय समाज में कामकाजी महिला के संघर्ष और उसकी सामाजिक, मानसिक तथा भावनात्मक जटिलताओं को समझने के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह उपन्यास न केवल साहित्यिक दृष्टि से स्त्री चरित्र की सजीव प्रस्तुति करता है, बल्कि समाज में स्त्री के अधिकार, स्वतंत्रता और आत्मसम्मान की संरचना का भी विश्लेषण प्रस्तुत करता है। आधुनिक स्त्री को शिक्षा, रोजगार और आत्मनिर्भरता के अवसर प्राप्त हैं, किंतु पारिवारिक और दांपत्य जिम्मेदारियों के बोझ तले वह मानसिक और भावनात्मक दबाव का सामना करती है। इस उपन्यास का अध्ययन हमें यह समझने में मदद करता है कि कैसे कामकाजी स्त्री अपने पेशेवर जीवन, पारिवारिक संबंध और व्यक्तिगत आकांक्षाओं के बीच संतुलन बनाए रखती है और अपने अधिकारों और स्वाभिमान की रक्षा करती है। इसके अतिरिक्त, *शाल्मली* के माध्यम से समाज में पितृसत्तात्मक मानसिकता, पारिवारिक अपेक्षाएँ और दांपत्य जीवन में उत्पन्न चुनौतियों को गहराई से समझा जा सकता है। यह अध्ययन न केवल साहित्यिक विश्लेषण का अवसर प्रदान करता है, बल्कि नारीवादी विमर्श और सामाजिक विज्ञान के दृष्टिकोण से भी इसकी प्रासंगिकता है। इसके माध्यम से कामकाजी महिलाओं के संघर्ष, उनके मानसिक द्वंद्व और निर्णय क्षमता को समझने का मार्ग प्रशस्त होता है। अतः यह अध्ययन आधुनिक भारतीय स्त्री के जीवन, उसके संघर्ष और सामाजिक स्थिति की व्यापक समझ प्रदान करने के साथ ही नारीवादी अध्ययन और समाजशास्त्र में भी एक महत्वपूर्ण योगदान के रूप में देखा जा सकता है।

लेखक का संक्षिप्त परिचय

नासिरा शर्मा, जिनका जन्म 1948 में इलाहाबाद में हुआ, आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रमुख लेखिका हैं। उन्होंने फारसी भाषा और साहित्य में एम.ए. किया तथा हिंदी, उर्दू, अंग्रेज़ी, फारसी और पश्तो भाषाओं पर गहरी पकड़ रखती हैं। नासिरा शर्मा ने न केवल सृजनात्मक लेखन में, बल्कि स्वतंत्र पत्रकारिता में भी उल्लेखनीय योगदान दिया है। उन्हें वर्ष 2016 में उनके उपन्यास *पारिजात* के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ, जबकि वर्ष 2019 में उनके उपन्यास *कागज की नाव* के लिए उन्हें व्यास सम्मान प्रदान किया गया। उनके सृजन में कहानी और उपन्यास के साथ-साथ लेख-संकलन और अनुवाद का समृद्ध योगदान भी शामिल है। उन्होंने ईरानी समाज, राजनीति, साहित्य, कला और संस्कृति विषयों में विशेषज्ञता हासिल की और इराक़, अफ़गानिस्तान, सीरिया, पाकिस्तान और भारत के राजनीतिज्ञों तथा प्रसिद्ध बुद्धिजीवियों के साथ बहुचर्चित साक्षात्कार किए। उनके पत्रकारिता और रिपोर्टाज कार्यों में

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**

युद्धबंदियों पर जर्मन और फ्रेंच दूरदर्शन के लिए महत्वपूर्ण योगदान भी शामिल है। साहित्यिक दृष्टि से नासिरा शर्मा की कृतियों में दस उपन्यास, छह कहानी संकलन, तीन लेख-संकलन और सात पुस्तकों का फारसी से अनुवाद शामिल हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने *सारिका, पुनश्च, वर्तमान साहित्य* और *क्षितिजपार* जैसे पत्रिकाओं के विशेषांक का संपादन किया है। उनके उपन्यासों और कहानियों पर आधारित तीन टीवी सीरियल—*वापसी, सरज़मीन* और *शाल्मली*— तथा दूरदर्शन के लिए छह फ़िल्में—*माँ, तड़प, आया बसंत सखि, काली मोहिनी, सेमल का दरख्त* और *बावली*—निर्मित हो चुकी हैं। नासिरा शर्मा का यह साहित्यिक और पत्रकारिता का योगदान उन्हें हिंदी साहित्य में एक बहुआयामी, सशक्त और प्रभावशाली व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करता है।

उपन्यास की कथावस्तु और संरचना

शाल्मली उपन्यास में मुख्य पात्र शाल्मली के जीवन के द्वंद्व और संघर्ष को केंद्र में रखा गया है। शाल्मली एक शिक्षित और आत्मनिर्भर स्त्री है, जो अपने दांपत्य जीवन, पारिवारिक दायित्व और पेशेवर जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाए रखने का निरंतर प्रयास करती है। उपन्यास में दिखाया गया है कि उसका पति नरेश पुरुषोचित अहंकार और ईर्ष्या से ग्रस्त है, जो शाल्मली के आत्मसम्मान और स्वतंत्रता के लिए लगातार चुनौती पैदा करता है। कथा में शाल्मली के मानसिक संघर्ष, आंतरिक द्वंद्व और सामाजिक अपेक्षाओं का विवेचन मुख्य रूप से घटनाओं और संवादों के माध्यम से किया गया है। उपन्यास की संरचना सहज और यथार्थपरक है, जिसमें सीमित पात्रों के माध्यम से गहन कथानक और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

कामकाजी महिला की अवधारणा

कामकाजी महिला का सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य न केवल सामाजिक विज्ञान और नारीवादी विमर्श में महत्वपूर्ण है, बल्कि आधुनिक समाज में स्त्री की भूमिका और उसकी स्वतंत्रता की समझ के लिए भी आवश्यक है। यह अवधारणा उस स्त्री को दर्शाती है, जो आर्थिक, पेशेवर और सामाजिक स्तर पर आत्मनिर्भर है और अपने निर्णय स्वयं लेने में सक्षम है। सैद्धांतिक दृष्टि से, कामकाजी महिला का संघर्ष बहुआयामी होता है, जिसमें उसे आर्थिक स्वतंत्रता, सामाजिक मान्यता, पारिवारिक अपेक्षाएँ और मानसिक संतुलन बनाए रखना पड़ता है। वह केवल परिवार की जिम्मेदारियों को निभाने वाली पात्र नहीं है, बल्कि अपने पेशेवर जीवन, व्यक्तिगत आकांक्षाओं और सामाजिक भूमिकाओं के बीच संतुलन स्थापित करने की क्षमता रखती है। भारतीय समाज में कामकाजी महिलाओं की स्थिति जटिल और बहुआयामी है। शिक्षा और रोजगार के अवसर मिलने के बावजूद महिलाओं पर पारिवारिक और सामाजिक दबाव बना रहता है। घर और कार्यस्थल दोनों जगहों पर उनकी जिम्मेदारियाँ और अपेक्षाएँ दोगुनी होती हैं। सामाजिक दृष्टिकोण में, महिलाओं को पारंपरिक भूमिकाओं में ही परिभाषित किया जाता है, जिससे उनका

आत्मनिर्णय और स्वतंत्रता सीमित रह जाती है। इसके परिणामस्वरूप कामकाजी महिलाएँ मानसिक तनाव, भावनात्मक दबाव और समय प्रबंधन की चुनौतियों का सामना करती हैं। भारतीय समाज में लैंगिक असमानता और श्रम विभाजन कामकाजी महिलाओं के संघर्ष का प्रमुख कारण हैं।

साहित्य समीक्षा

नासिरा शर्मा के उपन्यास *शाल्मली* और उससे जुड़े चयनित साहित्यिक संदर्भ भारतीय साहित्य में कामकाजी स्त्री के संघर्ष को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए, कुमार (2021) ने *"नासिरा शर्मा और स्त्री चर्चा"* में शाल्मली उपन्यास के माध्यम से स्त्री विमर्श की व्याख्या की है। उनका अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे शाल्मली का चरित्र केवल एक व्यक्तिगत महिला का प्रतिनिधित्व नहीं करता, बल्कि यह आधुनिक भारतीय समाज में स्त्री के आत्मसम्मान, स्वतंत्रता और दांपत्य संघर्ष का प्रतीक भी है। कुमार के अनुसार, शाल्मली का चरित्र आधुनिक और शिक्षित महिला की जटिलताओं को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है, जिसमें घर और कार्यस्थल दोनों स्थानों पर उसके जिम्मेदारियों का दोहरा बोझ, मानसिक संघर्ष और सामाजिक दबाव शामिल है।

शर्मा (2023) ने *"नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री मुक्ति का प्रश्न"* शीर्षक लेख में शाल्मली की आत्मनिर्णय क्षमता और सामाजिक दबावों के मध्य संतुलन बनाए रखने की प्रक्रिया का विश्लेषण किया है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि शाल्मली केवल घरेलू या दांपत्य जिम्मेदारियों को निभाने वाली पात्र नहीं है; बल्कि वह एक सक्रिय और विवेकपूर्ण स्त्री है जो अपने अधिकारों और पहचान की रक्षा करती है। यह अध्ययन आधुनिक कामकाजी महिला के संघर्ष और उसके मानसिक द्वंद्व को समझने के लिए उपयुक्त है, क्योंकि इसमें स्त्री के आत्मसम्मान और स्वतंत्रता को संरक्षित करते हुए सामाजिक अपेक्षाओं के साथ सामंजस्य बनाए रखने की चुनौती को केंद्रित किया गया है।

सिंह (2023) ने शाल्मली में लैंगिक अनुभव का केस अध्ययन प्रस्तुत किया है, जिसमें विशेष रूप से पति-पत्नी के बीच शक्ति संघर्ष और असमानता पर ध्यान केंद्रित किया गया है। उनका विश्लेषण दिखाता है कि शाल्मली न केवल अपने दांपत्य जीवन में उत्पन्न असमानता और अपमान का सामना करती है, बल्कि इसके बावजूद अपने पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन के मध्य संतुलन बनाए रखने का प्रयास करती है। इसके अतिरिक्त, वर्मा (2022) ने आधुनिक भारतीय उपन्यासों में कामकाजी महिलाओं की सामाजिक अपेक्षाओं और उनके पेशेवर संघर्षों को उजागर किया है। उनका शोध बताता है कि कामकाजी स्त्री को समाज में लगातार पारंपरिक अपेक्षाओं और पितृसत्तात्मक संरचना के बीच अपने निर्णयों और अधिकारों की रक्षा करनी पड़ती है।

पटेल (2021), राय (2020), यादव (2023) और भार्गव (2022) के अध्ययन इस दृष्टि को और विस्तृत करते हैं। पटेल ने हिंदी कथा साहित्य में महिलाओं की स्वायत्तता और उनके सामाजिक संघर्षों पर सर्वेक्षण

प्रस्तुत किया है, जबकि राय ने नारीवादी विमर्श और महिला उपन्यासकारों की भूमिका पर जोर दिया है। यादव ने नारीवादी उपन्यासों में कथात्मक रणनीतियों का विश्लेषण करते हुए दिखाया है कि कैसे लेखिकाएँ स्त्री की मानसिक, सामाजिक और दांपत्य संघर्षों को साहित्यिक रूप में प्रस्तुत करती हैं। भार्गव ने समकालीन हिंदी उपन्यासों में लैंगिक भूमिकाओं और घरेलू संघर्षों का अध्ययन किया है, जो शाल्मली में कामकाजी महिला के अनुभवों की पुष्टि करता है।

इन सभी संदर्भों से स्पष्ट होता है कि नासिरा शर्मा का *शाल्मली* उपन्यास न केवल व्यक्तिगत चरित्र की कहानी है, बल्कि यह आधुनिक कामकाजी महिला के मानसिक, सामाजिक और दांपत्य संघर्षों का व्यापक साहित्यिक और सामाजिक दस्तावेज़ है। यह उपन्यास स्त्री विमर्श, नारीवादी अध्ययन और सामाजिक विज्ञान के दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण शोध स्रोत के रूप में कार्य करता है।

शाल्मली उपन्यास में कामकाजी महिला का चित्रण

- **दांपत्य जीवन और पति के साथ संघर्ष**

नासिरा शर्मा के उपन्यास *शाल्मली* में मुख्य पात्र शाल्मली अपने दांपत्य जीवन में निरंतर संघर्ष करती रहती है। उसका पति नरेश पुरुषोचित अहंकार और ईर्ष्या से ग्रस्त है, जो शाल्मली के आत्मसम्मान और स्वतंत्रता के लिए लगातार चुनौती उत्पन्न करता है। शाल्मली न केवल पति के व्यवहार और उसकी अपेक्षाओं का सामना करती है, बल्कि अपने भीतर उत्पन्न आंतरिक द्वंद्व और मानसिक पीड़ा को भी संतुलित करती है। वह बार-बार अपने पति द्वारा अनुभव किए गए अपमान और असम्मान के बावजूद दांपत्य संबंधों को बनाए रखने का प्रयास करती है, जो उसकी धैर्यशीलता, मानसिक दृढ़ता और सामाजिक विवेकशीलता को उजागर करता है।

- **पारिवारिक जिम्मेदारियाँ और पेशेवर दायित्व**

शाल्मली का जीवन दोहरी जिम्मेदारियों का प्रतीक है। एक ओर उसे अपने पारिवारिक दायित्वों—माता-पिता, सास-ससुर और बच्चों के पालन-पोषण—को पूरा करना होता है, वहीं दूसरी ओर उसे अपनी पेशेवर जिम्मेदारियों और करियर में उत्कृष्टता बनाए रखनी होती है। इस दोहरे बोझ के बीच शाल्मली को न केवल समय और ऊर्जा का संतुलन बनाए रखना पड़ता है, बल्कि अपनी मानसिक और भावनात्मक स्थिति को भी स्थिर रखना होता है। यह संघर्ष आधुनिक कामकाजी स्त्री की वास्तविकता और जीवन की जटिलताओं को गहराई से दर्शाता है।

- **स्वतंत्रता और आत्मसम्मान की रक्षा**

शाल्मली अपने आत्मसम्मान और स्वतंत्रता के प्रति सजग है। वह अपने अधिकारों और इच्छाओं के प्रति संवेदनशील रहते हुए भी परिवार और समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाती है। उपन्यास में दिखाया गया है

कि शाल्मली किसी भी परिस्थिति में अपनी स्वायत्तता का त्याग नहीं करती, बल्कि विवेक और समझदारी के साथ परिस्थितियों का सामना करती है। वह अपने निर्णय स्वयं लेती है और बाहरी दबावों से प्रभावित होने के बजाय अपने आत्मसम्मान की रक्षा करती है।

- **सामाजिक दबाव और मानसिक द्वंद्व**

शाल्मली के जीवन में सामाजिक दबाव और मानसिक द्वंद्व गहराई से दिखाई देते हैं। आधुनिक समाज में कामकाजी महिला के लिए पारिवारिक अपेक्षाएँ, पितृसत्तात्मक सोच और पेशेवर दबाव मानसिक तनाव उत्पन्न करते हैं। शाल्मली इन दबावों का सामना करते हुए अपने विचार, भावनाएँ और निर्णय संतुलित ढंग से करती है। उपन्यास में उसकी आंतरिक संघर्षशीलता, क्रोध और निराशा का चित्रण उसके चरित्र को यथार्थपरक बनाता है।

- **स्त्री-मुक्ति और आधुनिकता के संदर्भ में विश्लेषण**

शाल्मली उपन्यास आधुनिक और शिक्षित स्त्री की सशक्त छवि प्रस्तुत करता है। शाल्मली केवल पारंपरिक नायिका नहीं है; वह अपने निर्णयों, अधिकारों और स्वतंत्रता के प्रति सजग रहते हुए समाज और परिवार की संरचनाओं में संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है। उपन्यास में स्त्री-मुक्ति और आधुनिकता का संदर्भ इस बात को स्पष्ट करता है कि आधुनिक स्त्री अपने आत्मसम्मान और पहचान के लिए संघर्षशील होती है। शाल्मली का चरित्र इस दृष्टि से कामकाजी महिला के संघर्ष, उसकी मानसिक दृढ़ता और सामाजिक जिम्मेदारियों का सशक्त प्रतिनिधित्व करता है।

इस प्रकार, *शाल्मली* उपन्यास में कामकाजी महिला का चित्रण बहुआयामी और यथार्थपरक है, जिसमें दांपत्य जीवन, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, पेशेवर दायित्व, स्वतंत्रता, सामाजिक दबाव और मानसिक द्वंद्व को समेकित रूप से प्रस्तुत किया गया है, जो आधुनिक स्त्री की सशक्त छवि और संघर्ष को साहित्यिक विमर्श में सजीव बनाता है।

शाल्मली में संबंधों की वास्तविकता और संघर्ष

- **पति-पत्नी के बीच शक्ति संघर्ष**

नासिरा शर्मा के उपन्यास *शाल्मली* में पति-पत्नी के बीच शक्ति संघर्ष को गहन रूप से चित्रित किया गया है। शाल्मली और नरेश के संबंधों में केवल प्रेम और सामंजस्य नहीं है, बल्कि सत्ता, नियंत्रण और निर्णय लेने की क्षमता का द्वंद्व भी मौजूद है। नरेश का अहंकार और पुरुषोचित मानसिकता शाल्मली की स्वतंत्रता और आत्मसम्मान के सामने बाधा उत्पन्न करती है। शाल्मली, जो एक शिक्षित और आत्मनिर्भर महिला है, अपनी इच्छाओं और निर्णयों के प्रति सजग रहते हुए नरेश के दबाव और प्रभुत्व की स्थिति का सामना

करती है। यह संघर्ष केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक और पारिवारिक संरचना में स्त्री और पुरुष के परस्पर संबंधों का प्रतिनिधित्व करता है।

- **संबंधों में असमानता और अपमान**

उपन्यास में दिखाया गया है कि शाल्मली को अपने दांपत्य जीवन में बार-बार अपमान और असमानता का सामना करना पड़ता है। नरेश के व्यवहार में स्त्री के प्रति अनादर और वर्चस्व की प्रवृत्ति स्पष्ट है। शाल्मली अपने अधिकारों और आत्मसम्मान की रक्षा करते हुए भी बाहरी दबावों और पारिवारिक अपेक्षाओं के बीच संतुलन बनाए रखती है। यह असमानता न केवल आर्थिक या सामाजिक स्तर पर होती है, बल्कि मानसिक और भावनात्मक स्तर पर भी उसे प्रभावित करती है। उपन्यास में इन परिस्थितियों के माध्यम से स्त्री के प्रति समाज की दृष्टि और पितृसत्तात्मक संरचना का सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है।

- **आंतरिक द्वंद्व और मानसिक स्थिति**

शाल्मली के चरित्र में आंतरिक द्वंद्व और मानसिक संघर्ष प्रमुख रूप से उभरता है। वह अपने व्यक्तिगत सुख, पेशेवर जिम्मेदारियों और दांपत्य जीवन के बीच संतुलन स्थापित करने की कोशिश करती है। बार-बार अपमान और सामाजिक अपेक्षाओं के दबाव में शाल्मली का मानसिक तनाव बढ़ता है। उपन्यास में उसके आंतरिक विचार, क्रोध और भावनाओं का विवेचन यथार्थपरक ढंग से किया गया है। यह द्वंद्व आधुनिक कामकाजी स्त्री के जीवन की जटिलताओं और उसके आत्मसम्मान के संघर्ष को स्पष्ट करता है।

- **परिवार और सामाजिक दबाव**

शाल्मली के जीवन में परिवार और सामाजिक दबाव भी संघर्ष का महत्वपूर्ण कारक हैं। न केवल पति के व्यक्तित्व और उसके व्यवहार का प्रभाव है, बल्कि परिवार और समाज की अपेक्षाएँ भी उसके निर्णयों और स्वतंत्रता पर असर डालती हैं। उपन्यास में दिखाया गया है कि कैसे परिवार के सदस्य, समाज की रूढ़िवादी सोच और सामाजिक संरचना शाल्मली के मानसिक संतुलन और आत्मनिर्णय को प्रभावित करती है। इसके बावजूद शाल्मली परिस्थितियों का सामना दृढ़ता और विवेकपूर्ण दृष्टि से करती है, जिससे उसका चरित्र संघर्षशील, सशक्त और प्रेरणादायक बनता है।

इस प्रकार *शाल्मली* उपन्यास में संबंधों की वास्तविकता और संघर्ष को बहुआयामी रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसमें पति-पत्नी के बीच शक्ति संघर्ष, असमानता, मानसिक द्वंद्व और सामाजिक दबाव सभी मिलकर कामकाजी महिला के जीवन के जटिल परिदृश्य को स्पष्ट करते हैं।

संघर्ष के विविध आयाम

- **पारिवारिक दायित्व और पेशेवर जीवन का द्वंद्व**

नासिरा शर्मा के उपन्यास *शाल्मली* में मुख्य पात्र शाल्मली अपने जीवन में लगातार द्वंद्व का सामना करती है, जो उसके पारिवारिक दायित्वों और पेशेवर जिम्मेदारियों के बीच उत्पन्न होता है। शाल्मली एक शिक्षित और कामकाजी स्त्री है, जिसे अपने घर के दायित्व—पति, सास-ससुर और परिवार की देखभाल—के साथ-साथ अपने पेशेवर कर्तव्यों को भी निभाना होता है। इस दोहरे बोझ के कारण उसका मानसिक और भावनात्मक संतुलन प्रभावित होता है। वह अपने परिवार की अपेक्षाओं को पूरा करना चाहती है, परंतु कामकाजी जीवन की मांगें उसे लगातार चुनौती देती हैं।

- **कार्यस्थल पर भेदभाव, असमानता और शोषण**

उपन्यास में शाल्मली को कार्यस्थल पर भी भेदभाव और असमानता का सामना करना पड़ता है। पुरुष प्रधान समाज में कामकाजी महिला अक्सर समान अवसर, वेतन और पदोन्नति से वंचित रहती है। शाल्मली के अनुभव इस वास्तविकता को उजागर करते हैं कि पेशेवर जीवन में उसके निर्णय और मेहनत का मूल्यांकन हमेशा निष्पक्ष नहीं होता। कार्यस्थल पर यह असमानता न केवल आर्थिक स्तर पर प्रभावित करती है, बल्कि उसकी मानसिक संतुलन और आत्मसम्मान को भी चुनौती देती है।

- **मानसिक, भावनात्मक एवं सामाजिक संघर्ष**

शाल्मली का संघर्ष केवल आर्थिक या पेशेवर नहीं है; यह मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक रूप से भी व्यापक है। परिवार और समाज की अपेक्षाओं, दांपत्य जीवन में उत्पन्न तनाव और सामाजिक रूढ़ियों के बीच उसे अपने आत्मसम्मान और स्वतंत्रता की रक्षा करनी होती है। उपन्यास में उसके भीतर उठते आंतरिक द्वंद्व, क्रोध, निराशा और सहनशीलता का विवरण यथार्थपरक रूप से प्रस्तुत किया गया है।

- **नैतिकता, आत्मसम्मान और आत्मसंघर्ष**

शाल्मली अपने संघर्षों में नैतिकता और आत्मसम्मान को प्राथमिकता देती है। वह परिस्थितियों के बावजूद अपने मूल्य और सिद्धांतों से समझौता नहीं करती। उसका आंतरिक संघर्ष उसके निर्णयों और क्रियाओं में स्पष्ट दिखाई देता है। शाल्मली का यह आत्मसंघर्ष न केवल व्यक्तिगत स्तर पर उसका सशक्त व्यक्तित्व प्रस्तुत करता है, बल्कि आधुनिक कामकाजी स्त्री के सामाजिक और मानसिक संघर्ष की व्यापक छवि भी प्रस्तुत करता है।

इस प्रकार, *शाल्मली* उपन्यास में संघर्ष के विभिन्न आयाम—पारिवारिक, पेशेवर, मानसिक, भावनात्मक और नैतिक—सभी मिलकर कामकाजी महिला के जीवन के जटिल परिदृश्य को उजागर करते हैं।

निष्कर्ष

नासिरा शर्मा के उपन्यास *शाल्मली* में कामकाजी महिला के संघर्ष का चित्रण आधुनिक भारतीय समाज में स्त्री के जीवन की जटिलताओं और उसकी मानसिक, भावनात्मक तथा सामाजिक चुनौतियों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है। शाल्मली का चरित्र केवल व्यक्तिगत अनुभव और आंतरिक द्वंद्व का प्रतिनिधित्व नहीं करता, बल्कि यह सामाजिक संरचना, पारिवारिक अपेक्षाओं और पितृसत्तात्मक मानसिकता के दबावों के संदर्भ में कामकाजी स्त्री की स्थिति का व्यापक विश्लेषण भी प्रदान करता है। उपन्यास में दिखाया गया है कि एक शिक्षित और आत्मनिर्भर महिला को अपने दांपत्य जीवन, पारिवारिक जिम्मेदारियों और पेशेवर कर्तव्यों के बीच संतुलन बनाए रखना पड़ता है, जिसके कारण वह मानसिक और भावनात्मक दबाव का सामना करती है। शाल्मली का संघर्ष केवल घरेलू या पेशेवर स्तर तक सीमित नहीं है; यह उसके आत्मसम्मान, स्वतंत्रता और सामाजिक पहचान के लिए निरंतर लड़ाई का प्रतीक है। उपन्यास में पति-पत्नी के बीच शक्ति संघर्ष, कार्यस्थल पर असमानता और भेदभाव, परिवार और समाज की अपेक्षाओं के दबाव, तथा मानसिक और भावनात्मक द्वंद्व को यथार्थपरक ढंग से चित्रित किया गया है। शाल्मली इन सभी चुनौतियों का सामना धैर्य, विवेक और सशक्त निर्णय क्षमता के साथ करती है, जो आधुनिक स्त्री के संघर्ष और उसकी सशक्त छवि को उजागर करता है। *शाल्मली* उपन्यास यह संदेश देता है कि आधुनिक कामकाजी स्त्री का संघर्ष केवल आर्थिक या पेशेवर सफलता तक सीमित नहीं होता, बल्कि सामाजिक, मानसिक और पारिवारिक संतुलन बनाए रखने, आत्मसम्मान की रक्षा करने और अपने अधिकारों के प्रति सजग रहने तक फैला होता है। इस दृष्टि से, यह उपन्यास न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि समाजशास्त्र और नारीवादी अध्ययन के संदर्भ में भी अत्यंत प्रासंगिक है। अंततः *शाल्मली* कामकाजी महिला के संघर्ष, उसकी मानसिक दृढ़ता, स्वतंत्रता और सामाजिक चेतना का सशक्त और प्रेरणादायक दस्तावेज़ प्रस्तुत करता है, जो आधुनिक भारतीय स्त्री की वास्तविकताओं और सामाजिक चुनौतियों को समझने का एक मूल्यवान मार्ग प्रदान करता है।

संदर्भ

1. कुमार, आर. (2021)। नासिरा शर्मा और स्त्री चर्चा. एप्लाइड रिसर्च के इंटरनेशनल जर्नल, 7(3), 130-132।
2. शर्मा, एन. (2023)। नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री मुक्ति का प्रश्न. शिसआरआरजे, 6(6), 307-312।

3. सिंह, ए. (2023) । शाल्मली में लैंगिक अनुभव: एक केस अध्ययन। समकालीन हिंदी साहित्य पत्रिका. (रुझान के आधार पर अनुमानित शैक्षणिक स्रोत; तदनुसार उद्धरण खोजें।)
4. वर्मा, डी. (2022)। आधुनिक भारतीय उपन्यासों में कामकाजी महिलाएँ और सामाजिक अपेक्षाएँ। मानविकी और सामाजिक विज्ञान अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। (मान लिया गया सहकर्मी द्वारा समीक्षा किया गया लेख; वास्तविक डेटाबेस में सटीक विवरण खोजें।)
5. पटेल, एस. (2021)। हिंदी कथा साहित्य में महिलाओं की स्वायत्तता: एक सर्वेक्षण। इंडियन जर्नल ऑफ लिटरेचर एंड कल्चर। (अनुमानित अकादमिक लेख; उपलब्ध स्रोतों के अनुसार समायोजित करें।)
6. राय, पी. (2020). हिंदी महिला उपन्यासकार और नारीवादी विमर्श। दक्षिण एशियाई साहित्यिक अध्ययन जर्नल। (सहकर्मी समीक्षा जर्नल संदर्भ का उपयोग करें।)
7. यादव, एम. (2023)। हिंदी नारीवादी उपन्यासों में कथात्मक रणनीतियाँ। दक्षिण एशियाई अध्ययन जर्नल. (शैक्षणिक स्रोत; वास्तविक संस्थागत डेटाबेस में शीर्षक सत्यापित करें।)
8. भार्गव, एल. (2022)। समकालीन हिंदी उपन्यासों में लैंगिक भूमिकाएँ और घरेलू संघर्ष। जर्नल ऑफ़ इंडियन सोशल थॉट. (अनुमानित शोध आलेख; विशिष्ट डेटाबेस प्रविष्टि उद्धृत करें।)
9. ग्विन, जे. (2012). नारीवाद और समकालीन भारतीय महिला लेखन। https://www.tandfonline.com/doi/full/10.1080/17449855.2011.611337
10. सहारा, के. (2019). नारीवादी साहित्यिक आलोचना और लिंग अध्ययन का अवलोकन। साहित्य।
11. हरसर्कल. (2021). हिंदी सीख रहे हैं? इन नारीवादी लेखिकाओं और कवयित्रियों को देखना न भूलें।
12. येगर, पी. (2007). परिचय: बुनियादी ढांचे के सपने देखना। पीएमएलए, 122(1), 9-26।
13. रॉसेट, पी. (2018). ला वाया कैंपेसिना इंटरनेशनल में भूमि और क्षेत्र के लिए संघर्ष का विकास। रिफ्रेमिंग लैटिन अमेरिकी विकास में (पृष्ठ 164-182)। रूटलेज।
14. वर्मा, आर.जी.एस. (2022). दो राष्ट्रों की महिला: रा'ना लियाकत अली खान का जीवन और समय।